Dr. Premlata
Department of History

P.G SEM II

Saathi Notebooks

Date ___ / ___

भारतीय रंगमंच का औपनिवेशिक काल में विकास

औपनिवेशिक काल में भारतीय रंगमंच ने एक नए युग की शुरुआत की। इस समय में पश्चिमी शिक्षा, संस्कृति और नाटक के प्रभाव ने भारतीय रंगमंच को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रारंभिक प्रभाव :→

- अंग्रेजों ने भारत में अपने नाटक और ओपेरा का प्रदर्शन शुरू किया, जिससे भारतीयों को पश्चिमी रंगमंच की तकनीक और शैली का पता चला
- भारतीय नाटककारों ने पश्चिमी नाटक की तकनीक को अपनाया और अपने नाटकों में इसका उपयोग करना शुरू किया।

नई थिएटर कंपनियों का गठन

- इस काल में कई नई थिएटर कंपनियों का गठन हुआ, जैसे कि बंगाल थिएटरिकल एसोसिएशन (1853) और पारसी थिएटर कंपनी (1853)
- इन कंपनियों ने भारतीय नाटकों का प्रदर्शन करना शुरू किया और भारतीय रंगमंच को एक नया मंच प्रदान किया।

महत्वपूर्ण नाटककार :→ माइकल मधुसूदन दत्त, गिरीश चंद्र घोष और अन्नासाहेब किर्लोस्कर।

Premlata
History